(जनवरी–जून 2021 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, चतुर्थ सेमेस्टर

MHL-E417

लोक साहित्य

पूर्णांक 100 सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट – 6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम

इकाई – 1 लोक और लोक–वार्ता, लोक–वार्ता और लोक–विज्ञान।
लोक–संस्कृति : अवधारणा, लोक–वार्ता और लोक–संस्कृति, लोक–संस्कृति और साहित्य।
लोक–साहित्य : अवधारणा, संस्कृत वाङ्मय में लोकोन्मुखता।
हिन्दी के आरम्भिक साहित्य में लोकतत्व, वर्तमान अभिजात साहित्य और लोक–साहित्य का अंतःसम्बन्ध। लोक–साहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्ध।

इकाई – 2 भारत में लोक–साहित्य के अध्ययन का इतिहास।
हिन्दी लोक–साहित्य के विशिष्ट अध्येता। लोक–साहित्य की अध्ययन–प्रक्रिया एवं संकलन की समस्याएँ।

इकाई – 3 लोक–साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण–
लोक–गीत, लोक–नाट्य, लोक–कथा, लोक–गाथा, लोक–नृत्य–नाट्य, लोक–संगीत।
लोक–गीत : संस्कार–गीत, व्रत–गीत, श्रम–गीत, ऋतु–गीत, जाति–गीत।
लोक–नाट्य : रामलीला, रासलीला, कीर्तनियाँ, स्वांग, यक्षगान, भवाई संपेड़ा, विदेसिया, माच, भाँड़, तमाशा, नौटंकी, जात्र, कथकली।
हिन्दी लोक–नाट्य की परम्परा एवं प्रविधि। हिन्दी नाटक और रंगमंच पर लोक नाट्यों का प्रभाव।
लोक–कथा : व्रत–कथा, परी–कथा, नाग–कथा, बोध–कथा, कथानक–रूढ़ियाँ अथवा अभिप्राय।

इकाई – 4 लोक–गाथा : ढोला–मारू, गोपीचन्द – भरथरी, लोरिकायन, नल–दमयंती, लैला–मंजनूँ, हीर–राँझा, सोहनी–महीवाल, लोरिक–चंदा, बगडावत, आल्हा–हरदौल।
लोक–नृत्य–नाट्य।
लोक–संगीत : लोकवाद्य तथा विशिष्ट लोक धुनें।
लोक–भाषा : लोक सुभाषित, मुहावरे, कहावतें, पहेलियाँ।

इकाई – 5 निम्नलिखित जनपदीय भाषाओं के लोक–सहित्य में से किसी एक का अध्ययन– राजस्थानी, भोजपुरी, ब्रज, अवधी, बुन्देलखण्डी, हरियाणवी, खड़ी बोली, कुमाऊँनी, गढ़वाली, छत्तीसगढ़ी, बघेली, मालवी।

संदर्भ ग्रन्थ–

1. लोक साहित्य विज्ञान – डॉ० सत्येन्द्र
2. कुमाऊँ का लोक साहित्य – डॉ० कृष्णानन्द जोशी
3. गढ़वाली लोक साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन – मोहन लाल बाबुलकर
4. लोक साहित्य की रूपरेखा – सम्पा० डॉ० कृष्ण चन्द्र शर्मा
5. लोक साहित्य : सिद्धान्त और प्रयोग – डॉ० श्रीराम शर्मा
6. लोक साहित्य के प्रतिमान – डॉ० कुंदन लाल उप्रेती
7. कौरवी लोक साहित्य – डॉ० नवीन चन्द्र लोहनी

(जनवरी–जून 2020 से लागू)